A-0412

Total Pages : 4 **Roll No. ----------**

DVS-103

ग्रहनिर्माण विवेचन

Diploma in Vastushashtra (DVS)

1st Year, Examination 2024 (Dec.)

Time: 2:00 hrs Max. Marks: 100

नोट : यह प्रश्नपत्र सौ (100) अंकों का है जो दो (02) खण्डों, क तथा ख में विभाजित है। प्रत्येक खण्ड में दिए गए विस्तृत निर्देशों के अनुसार ही प्रश्नों को हल करना है। परीक्षार्थी अपने प्रश्नों के उत्तर दी गई उत्तर–पुस्तिका तक ही सीमित रखें। कोई अतिरिक्त (बी) उत्तर पुस्तिका जारी नहीं की जायेगी।

P.T.O.

खण्ड–'क'

(दीर्घ उत्तरों वाले प्रश्न)

नोट : खण्ड 'क' में पाँच (05) दीर्घ उत्तरों वाले प्रश्न दिये गये हैं, प्रत्येक प्रश्न के लिए छब्बीस (26) अंक निर्धारित हैं। शिक्षार्थियों को इनमें से केवल दो (02) प्रश्नों के उत्तर देने हैं।

[2x26=52]

Q.1. वृषवास्तु चक्र के महत्व को बताते हुए, इसके निर्माण की प्रक्रिया को लिखिए।

Q.2. गृहारम्भ में कलश चक्र का क्या महत्व है, इसका वर्णन कीजिये।

Q.3. शिलान्यास विधि में खात विचार का विस्तारपूर्वक वर्णन कीजिये।

Q.4. रसोई घर तथा पूजा घर की आंतरिक संरचना के बारे में लिखिये।

Q.5. यज्ञ वेदी निर्माण के लिये राहुमुखपुच्छ का वर्णन करें।

खण्ड–'ख'

(लघु उत्तरों वाले प्रश्न)

नोट : खण्ड 'ख' में आठ (08) लघु उत्तरों वाले प्रश्न दिये गये हैं, प्रत्येक प्रश्न के लिए बारह (12) अंक निर्धारित हैं। शिक्षार्थियों को इनमें से केवल चार (04) प्रश्नों के उत्तर देने हैं।

[4x12=48]

Q.1. जलाशय निर्माण में राहुमुखपुच्छ विचार का निर्णय कैसे किया जाता है, इसका वर्णन करें।

Q.2. खात विचार विधि का वर्णन कीजिये।

Q.3. खातारम्भ में राहूमुखपुच्छ के फल को लिखिये।

Q.4. वर्णादि क्रम के अनुसार शिला के प्रमाण को लिखिये।

P.T.O.

Q.5. नारद मतानुसार ग्रहनिर्माण विधि का वर्णन करें।

Q.6. द्वार सम्बन्धी उपद्रवों के फलों को लिखिए।

Q.7. गृहशान्ति पूजन नही करवाने से होने वाली हानियों को लिखिये।

Q.8. गृहारम्भ में नक्षत्र शुद्धि का वर्णन कीजिए।

****